डॉ. बुद्धदेव प्रसाद सिंह
सहायक प्राचार्य (asst. prof.),
हिन्दी विभाग,
डी.बी. कॉलेज जयनगर

पाठ्य सामग्री,
स्नातक प्रथम वर्ष, राष्ट्रभाषा हिन्दी (50),
कला, विज्ञान एवं वाणिज्य संकाय के लिए।

दिनांक- 28.4.2020
(व्याख्यान संख्या-14)

* 'रश्मिरथी' के नामकरण की सार्थकता।

किसी रचना का नाम उनके प्रभाव एवं प्रचार पक्ष से भी सम्बद्ध होता है परंतु उससे भी बढ़कर और प्राथमिक रूप से उसकी आंतरिक विषय-वस्तु की एकत्र, समेकित एवं सटीक भावाभिव्यक्ति से सम्बद्ध होता है। इसलिए कहा जाता है कि किसी साहित्यिक कृति के सृजन की तरह ही कठिन उसका सटीक नामकरण भी होता है। वैसे तो लोग व्यक्तियों के नामों से भी उनकी जीवन-दिशा, उनके जीवन की सिद्धि-प्रसिद्धि, सफलता-असफलता इत्यादि बातों का परोक्षतः निर्धारण करने लगते हैं, परंतु यह विवादास्पद होने के बावजूद किसी साहित्यिक कृति के नामकरण से उसकी प्रभावात्मकता में वृद्धि या कमी तथा सफलता या असफलता में योगदान तो निश्चित रूप से निर्धारित होता है।

साहित्यिक कृतियों के नामकरण की अनेक प्रणालियाँ प्रचलित हैं। उदाहरण के लिए नायक अथवा नायिका के नाम पर, जैसे कि 'चंद्रगुप्त', 'यशोधरा'। घटना अथवा घटनास्थल से संबंधित नाम, उदाहरण स्वरूप 'जयद्रथ वध', 'पंचवटी', 'हल्दीघाटी' आदि। इसी प्रकार कुछ पुस्तकों के नाम ऐसे भी रखे जाते हैं जिससे उनमें संकलित रचनाओं की संख्या का बोध होता है। उदाहरण के लिए 'दस एकांकी', 'पांच कहानियाँ' आदि। इसी क्रम में विधा के नाम के बदले हल्के प्रतीकात्मक शब्दों का भी प्रयोग कर लिया जाता है, जैसा कि प्रेमचंद ने भी अपनी अनेक पुस्तकों के नाम में किया है। इस प्रकार के उदाहरण भी अनेक मिलेंगे जैसे कि 'पंच प्रसून', 'पाँच फूल' आदि। इस क्रम में हम 'रश्मिरथी' के नामकरण पर विचार करते हैं तो स्पष्ट ही प्रतिभासित होता है कि यह नाम नायक के चरित्र पर आधारित है। यहाँ 'रश्मिरथी' शब्द का प्रयोग कर्ण के लिए किया गया है। 'रश्मि' का अर्थ है प्रकाश, उज्ज्वलता, पुण्य। 'रथी' रथ पर चलने वाले को या रथवाले को कहते हैं। इस दृष्टि से 'रश्मिरथी' का अर्थ प्रकाश के रथ पर चलने वाला या पुण्य के रथ पर चलने वाला होगा। भावात्मक रूप से उसे यशस्वी भी कह सकते हैं। 'कीर्तिर्यस्य स जीवति।' कीर्ति रूपी रथ पर सवार 'रश्मिरथी'। महाकवि दिनकर ने कर्ण के जीवन को तो आद्यंत

निष्कलुष दिखाया ही है, 'रश्मिरथी' के सप्तम सर्ग में कर्ण के ही मुख से का कहलवाया है ;-

महानिर्वाण का क्षण आ रहा है,
नया आलोक स्यन्दन आ रहा है,
तपस्या से बने हैं यंत्र जिसके
कसे जप योग से है तंत्र जिसके
जुते हैं कीर्तियों की बाजि जिसमें
चमकती है किरण की राशि जिसमें
हमारा पुण्य जिसमें झूलता है
विभा के पद्म-सा जो फूलता है।

इन बातों से कर्ण का 'रश्मिरथी' होना पूर्णतः युक्तियुक्त और उचित ठहरता है। स्वयं श्रीकृष्ण ने भी कर्ण के पुण्यमय जीवन की प्रशंसा युधिष्ठिर से सप्तम सर्ग में की है :-

हृदय का निष्कपट पावन क्रिया का
दलित तारक समुद्धारक त्रिया का
बड़ा बेजोड़ दानी था सदय था
युधिष्ठिर कर्ण का अद्भुत हृदय था।

और भी

मनुजता का नया नेता उठा है
जगत से ज्योति का जेता उठा है।

अतः न तो कर्ण के आलोकमय जीवन में संदेह है, न उसके पुण्यमय और धवल कीर्तिमय होने में। उसका चरित्र तो आदि से अंत तक पुण्यमय एवं प्रोज्ज्वल है ही। यही कारण है कि कर्ण पर आधारित काव्य के लिए दिनकर जी को 'रश्मिरथी' नाम ने ही आकृष्ट किया। यह नाम 'कर्ण' से कहीं अधिक कलात्मक और वस्तुव्यंजक है। इस नाम से अमल-धवल कर्ण का संपूर्ण जीवन हमारी आंखों के सामने उभर आता है। अतः यह नाम सर्वथा उपयुक्त कलात्मक एवं युक्तिसंगत है। इतना ही नहीं इस नाम के जहाँ तक सटीक, संक्षिप्त, विशिष्ट, सम्मोहक एवं चमत्कारपूर्ण होने की बात है, दिनकर जी द्वारा प्रदत 'रश्मिरथी' नाम इन सभी गुणों से युक्त है। अच्छे शीर्षक के संबंध में चार्ल्स बैरेट नामक आलोचक ने लिखा भी है कि " a good title is apt, specific, attractive, new and short" अर्थात् सटीकता, संक्षिप्तता, विशिष्टता, सम्मोहकता एवं नूतनता अच्छे शीर्षक के गुण हैं। इन सबके अतिरिक्त कर्ण अर्थात् रश्मिरथी ही काव्य का नायक एवं केंद्रीय आकर्षण है। इन सभी बिंदुओं की कसौटी पर 'रश्मिरथी' नाम उचित एवं सार्थक है; और यह इतना सफल है कि 'रश्मिरथी' नाम जो कर्ण का पर्यायवाची है, उसके लिए रूढ़ सा हो गया है।